महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती: विविधिकरण एवं आय बढ़ाने हेतु एक विकल्प" प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट

A Report on Training Program on "Cultivation of Important Temperate Medicinal Plants: An Option for Diversification and Income Augmentation"

भा.वा.अ.शि .प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने तागनु चिड़गांव में "महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की खेती को उगाने बारे *कृषि विज्ञान केंद्र रोहड़ू एवम त्रिदेव औषधीय पौध उत्पादन सोसाइटी चिरगांव के सहयोग से VVK के अंतर्गत, 17 मार्च 2023 को एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन तागनू, रोहड़ू, शिमला में किया ।

डा० जगदीश सिंह, वैज्ञानिक ने बताया कि क्षेत्र की जलवायु महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की खेती के लिए उपयुक्त है और औषधीय पौधों की खेती कर स्थानीय लोग सेब के बगीचे से अतिरिक्त आय ले सकते है । औषधीय पौधे जैसे कि मुश्कबाला, करू, चोरा, सलममिसरी, निहानी सेब के बगीचे में अंतरवर्तीय फसल के रूप में उगा सकते है । उन्होंने इसकी खेती के लिए विकसित कृषि वानिकी मॉडल की जानकारी सांझा की । उन्होनें बताया कि संस्थान द्वारा वनककड़ी, करू तथा मुश्कबाला आदि महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों की उच्च गुणवत्ता वाले पौधों की पहचान कर ली गयी है और इन्हें खेती हेतु विभिन्न हितधारकों के बीच बांटा जा रहा है । डॉ. संदीप शर्मा ने करू और मुश्कवाला की नर्सरी तकनीक की जानकारी सांझा की । उन्होंने बताया कि इन मूल्यवान औषधीय पौधों की रक्षा और संरक्षण का एकमात्र तरीका उनका कृषिकरण है । औषधीय और सुगंधित पौधों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए आधुनिक नर्सरी तकनीक और सतत विकास के लिए जैविक खेती जरूरी है । उन्होने औषधियों पौधों की मार्केटिंग पर भी जानकारी सांझा की ।

डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने हिमालय क्षेत्र में पाए जाने वाले औषधीय पौधों के पारंपरिक उपयोग की जानकारी सांझा की । उन्होंने बताया कि औषधीय पौधों को विभिन्न रोगों के उपचार के लिए उपयोग किया जाता रहा है परंतु आज यह ज्ञान लुप्त होने के कगार पर है । अतः इसके बारे में जानकारी संरक्षित करना आवश्यक है । डॉ. नरेंद्र कैथ प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र रोहड़ू ने कहा कि कृषि विज्ञान केंद्र रोहड़ू औषधीय पौधों उगाने के लिए हर संभव लोगों की सहायता करेगा । उन्होंने लोगों को औषधीय पौधे उगाने के लिए प्रोत्साहित किया । इसके अलावा उन्होंने मोटे अनाज जैसे की कोदरा, चौलाई, ओगला, कौणी के औषधीय गुणों के बारे में बताया । विशेषज्ञ द्वारा प्रतिभागियों को औषधीय पौधों से संबन्धित समस्याओं के समाधान करने के तरीके बताये गए । प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागियों ने हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान,शिमला को इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन करने के लिए आभार व्यक्त किया तथा भविष्य में ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने के लिए आग्रह किया । इस अवसर पर त्रिदेव औषधीय पौधों उत्पादन सोसाइटी के सचिव श्री कृपाल सिंह, कृषि विज्ञान रोहड़ू के वैज्ञानिक डॉ दिनेश शर्मा, श्री स्वराज सिंह, तकनीशियन, हि.व.अ. स. उपस्थित थे । प्रशिक्षण कार्यक्रम में जांगलिक, दीयूदि पंचायत के महिला मंडल के सदस्यों सहित 45 किसानों ने भाग लिया ।

GLIMPSES OF THE TRAINING PROGRAM

Media Clips

लुप्त हो रहा औषधीय पौधों के उपयोग का ज्ञान

हिमाचल दस्तक ▮ रोहड़ू

▮ तांगनू में किसानों को दी औषधीय पौधों के पारंपरिक उपयोग की जानकारी

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला जिले के अंतर्गत चिड़गांव तहसील के तांगनु जांगलिख व देऊदी पंचायत के किसानों के लिए तांगनू गांव में महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की खेती के बारे में कृषि विज्ञान केंद्र रोहड़ू एवं त्रिदेव औषधीय पौधों उत्पादन सोसाइटी रोहल के सहयोग से एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस अवसर पर वैज्ञानिक डॉ. जगदीश सिंह ने बताया कि क्षेत्र की जलवायु महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की खेती की खेती के लिए उपयुक्त है और औषधीय पौधों की खेती कर स्थानीय लोग सेब के बागीचे से अतिरिक्त आय ले सकते हैं। डॉ. जोगिंद्र सिंह चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने हिमालय क्षेत्र में पाए जाने वाले औषधीय पौधों के पारंपरिक उपयोग की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि औषधीय पौधों को विभिन्न रोगों के उपचार के लिए उपयोग किया जाता रहा है परंतु आज यह ज्ञान लुप्त होने के कगार पर है। अतः इसकी जानकारी संरक्षित करना आवश्यक है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जांगलिक, दीऊदी पंचायत के 45 किसानों ने भाग लिया।

तांगनू में औषधीय पौधों की खेती पर आयोजित शिविर में उपस्थित लोग व अधिकारी।

पौधों के संरक्षण को कृषिकरण जरूरी

इस दौरान डॉ. संदीप शर्मा ने करू और मुश्कबाला की नर्सरी तकनीक की जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि इन मूल्यवान औषधीय पौधों की रक्षा और संरक्षण का एकमात्र तरीका उनका कृषिकरण है। औषधीय और सुगंधित पौधों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए आधुनिक नर्सरी तकनीक और सतत विकास के लिए जैविक खेती जरूरी है। उन्होंने औषधियों पौधों की मार्केटिंग पर विस्तृत में जानकारी साझा की।

अमर उजाला | रोहड़ू

किसानों को औषधीय पौधे उगाने के दिए गुर

रोहड़ू के तांगनू में जागरुकता शिविर का आयोजन
बागवानों को बताए फायदे

संवाद न्यूज एजेंसी

रोहड़ू। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के दूरदराज के गांव तांगनू में लोगों को औषधीय पौधों की खेती के बारे में जागरूक किया गया। यह शिविर कृषि विज्ञान केंद्र रोहड़ू एवं त्रिदेव औषधीय पौध उत्पादन सोसायटी चिड़गांव के सहयोग से आयोजित हुआ। कार्यक्रम में डॉ जगदीश सिंह ने बताया कि क्षेत्र की जलवायु महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की खेती लिए उपयुक्त है।

औषधीय पौधों की खेती से स्थानीय लोग सेब के बगीचे के अतिरिक्त आय ले सकते हैं। बगीचों में किसान मुश्कबाला, करू, चोरा, सलममिसरी सेब के बगीचे में अंतरवर्तीय फसल के रूप में उगा सकते हैं।

उन्होंने बताया कि संस्थान ने वनककड़ी, करू और मुश्कबाला जैसी महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों की उच्च गुणवत्ता वाले पौधों की पहचान कर ली है। अब इनकी खेती के लिए विभिन्न हित धारकों के बीच पौधे वितरित किए जा रहे हैं। डॉ. संदीप शर्मा ने करू और मुश्कबाला की नर्सरी तकनीक की जानकारी भी साझा की।

डॉ. जोगिंद्र सिंह चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने हिमालय क्षेत्र में पाए जाने वाले औषधीय पौधों के पारंपरिक उपयोग की जानकारी दी। डॉ. नरेंद्र कायथ प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र रोहड़ू ने कहा कि उनके द्वारा औषधीय पौधों को उगाने के लिए हर संभव लोगों की सहायता के साथ प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस अवसर पर त्रिदेव औषधीय सोसाइटी के सचिव कृपाल सिंह, कृषि विज्ञान रोहड़ू के वैज्ञानिक डॉ दिनेश शर्मा, स्वराज सिंह मौजूद रहे।

****